संस्कृत साहित्य सौरभ
महावीर-चरित

संस्कृत-साहित्य-सौरभ
२२

भवभूति-कृत

महावीर-चरित

●

श्री सुशील
द्वारा
कथा-सार

●

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

●

१९५८

सस्ता साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली
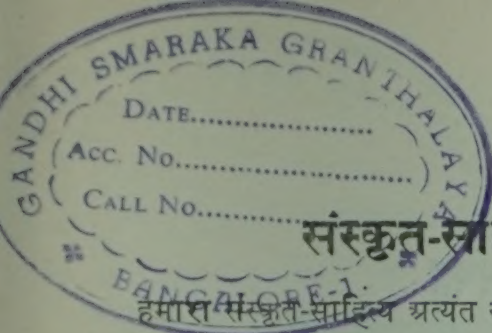
संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यंत समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके संबंध में मूल्यवान सामग्री का अनंत भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिंदी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परंतु उसका रस वे हिंदी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर संस्कृत के महाकवियों, नाटक-कारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिंदी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का संपादन हिंदी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

इस माला में कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। आशा है, हिंदी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान् रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

दूसरा संस्करण

इस माला की पुस्तकें बहुत ही लोकप्रिय हो रही हैं और हमें हर्ष है कि कुछ पुस्तकों का दूसरा-तीसरा संस्करण तक प्रकाशित हो चुका है। इस पुस्तक का यह दूसरा संस्करण है। आशा है कि भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रेमी पाठक इन पुस्तकों को और भी चाव से अपनायेंगे।

—मंत्री

भूमिका

संस्कृत के नाटककारों में भवभूति अपने मौलिक चिंतन के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने तीन रसों को लेकर तीन नाटक लिखे। 'उत्तर-राम-चरित' में करुण-रस, 'मालती-माधव' में शृंगार-रस और प्रस्तुत नाटक 'महावीर-चरित' में वीर-रस की प्रधानता है। उनकी कला हर दृष्टि से ऊंची है। मधुर छंद गूंथने में उनके समान कोई नहीं है। 'ध्वनि' के लिए वह प्रसिद्ध हैं ही।

'महावीर-चरित' की कथा रामायण पर आधारित है, परंतु कुछ परिवर्तन भी उन्होंने किये हैं। जैसे राम-वन-गमन की कथा मिथिला में ही घटित हो गई है। रावण ने बालि को राम को मारने के लिए भेजा, यह बात भी नई है। सारे षड्यंत्र का सूत्रधार माल्यवान को बनाकर तो भवभूति ने एकदम नई कल्पना कर डाली है। ऐसे ही और भी कई परिवर्तन हैं, पर कथा की मूल धारा में कोई अंतर नहीं पड़ा है।

विद्वानों का अनुमान है कि भवभूति आठवीं शताब्दी में हुए थे। उनका जन्म दक्षिण में विदर्भ देश के पद्मपुर गांव में हुआ था। उनके दादा का नाम भट्ट गोपाल, पिता का नीलकंठ और माता का जातुकर्णी था। वह कश्यप-गोत्रीय यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के पंडित थे। उन्हें राजाश्रय शायद नहीं मिला, क्योंकि उनके नाटकों का अभिनय राजसभा में न होकर उज्जयिनी में महाकाल की यात्रा के समय इकट्ठी हुई जनता के सामने हुआ था। ऐसा जान पड़ता है कि इस काल के विद्वान भी उनका आदर नहीं करते थे। यह विद्रोही जो थे! कुछ भी हो, आज वह एक महान नाटककार माने जाते हैं। आगे भी माने जाते रहेंगे।

—संपादक
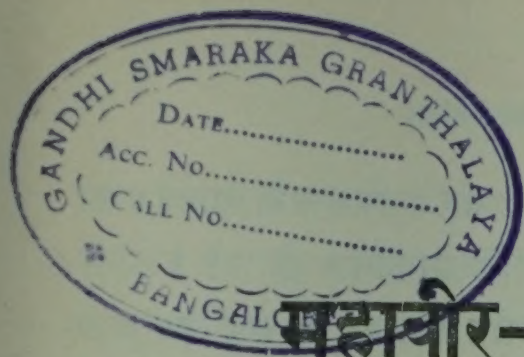
महावीर-चरित

: १ :

ब्रह्मर्षि विश्वामित्र का नाम किसने नहीं सुना। वह कौशकी नदी के तट पर कुटी बनाकर रहते थे और उनके रहने का स्थान 'सिद्धाश्रम' के नाम से प्रसिद्ध था। उन दिनों राक्षस-लोग ऋषियों के यज्ञ में बड़ा विघ्न डाला करते थे। इसलिए जब विश्वामित्र ने यज्ञ करने का विचार किया तो वह महाराज दशरथ के पास अयोध्या गये और यज्ञ की रक्षा के लिए उनसे राम और लक्ष्मण को मांग लाये। राजा जनक को भी इस यज्ञ में आने का निमंत्रण भेजा गया था। इसीलिए उन्होंने अपने भाई कुशध्वज को सीता और उर्मिला के साथ यज्ञ में भाग लेने के लिए भेजा। यह समाचार पाकर विश्वामित्र उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़े। राम और लक्ष्मण भी उनके साथ थे। यथोचित स्वागत के बाद विश्वामित्र ने अतिथियों का परस्पर परिचय कराया। राम-लक्ष्मण को देखकर राजा कुशध्वज बड़े प्रभावित हुए। सीता और उर्मिला

ने भी उन्हें देखा और उस प्रथम मिलन के अवसर पर ही वे सब एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो उठे ।

जब वे आश्रम की ओर लौट रहे थे तब एक ओर से उन्हें 'जय जगतपति राम की जय' ये शब्द सुनाई पड़े । सब चकित होकर उस ओर देखने लगे । वह एक नारी का स्वर था । विश्वामित्र ने बताया कि वह गौतम ऋषि की धर्मपत्नी अहल्या है । किसी कारण ऋषि ने क्रुद्ध होकर उनको पत्थर हो जाने का शाप दे दिया था । आज राम के चरणों का स्पर्श पाकर अहल्या ने फिर से अपना पहला रूप पा लिया है । राम की ऐसी महिमा देखकर सीता बहुत प्रभावित हुईं । कुशध्वज ने तो मन-ही-मन इस बात का निश्चय कर लिया कि यदि राजा जनक शिव के धनुष की प्रतिज्ञा को बीच में न डालें तो मैं सीता का विवाह इन्हीं तेजस्वी राम से करूंगा ।

इसी समय रावण के साथ सीता के विवाह का प्रस्ताव लेकर एक राक्षस वहां आया । इस प्रस्ताव से सबको बड़ा दुःख हुआ, क्रोध भी आया, पर वे यह निश्चय नहीं कर सके कि उसे क्या उत्तर दिया जाय । वे इसी दुविधा में थे कि एक ओर से कोलाहल उठता सुनाई पड़ा । ऋषि लोग भय के कारण चिल्ला रहे थे ।

पता लगाने पर मालूम हुआ कि ताड़का नाम की एक भयंकर राक्षसी उनको परेशान कर रही है। विश्वामित्र ने तुरंत राम को आदेश दिया कि वह उस राक्षसी को मार डालें। राम बोले, "गुरुदेव, यह तो स्त्री है। मैं इसे कैसे मार सकता हूं?"

विश्वामित्र ने उत्तर दिया, "यह राक्षसी कई ब्राह्मणों को मार चुकी है। ऐसी स्त्री को मारने में कोई डर नहीं है।"

तब राम ने एक ही बाण से ताड़का को मार गिराया। उनकी ऐसी वीरता देखकर सब लोगों को और भी आश्चर्य हुआ। महर्षि विश्वामित्र ने उसी समय अनेक दिव्य अस्त्र राम को दिये। राम बोले, "भगवन्, मेरी प्रार्थना है कि ये दिव्यास्त्र लक्ष्मण सहित मेरे अधीन हों।" विश्वामित्र ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। अब राम ने उन अस्त्रों से प्रकट होने की प्रार्थना की और फिर विसर्जन कर दिया। यह अद्भुत घटना देखकर राजा कुशध्वज मौन न रह सके। उन्होंने प्रस्ताव किया कि सीता का विवाह राम से होना चाहिए। विश्वामित्र भी यही चाहते थे। उन्होंने राजा से कहा कि वह शिव-धनुष का स्मरण करें। स्मरण करते ही शिव-धनुष वहां प्रकट

हो गया और राम ने अनायास उसे तोड़ डाला। देर तक उसके टूटने की ध्वनि वातावरण में गूंजती रही।

राक्षस ने जब यह देखा तो वह डर गया, लेकिन राजा कुशध्वज के हर्ष का कोई ठिकाना न था। वह जो चाहते थे वह उनको मिल गया था। उन्होंने सीता का विवाह राम से तय कर दिया। यही नहीं, उन्होंने उर्मिला का विवाह लक्ष्मण के साथ और अपनी दोनों कन्याओं मांडवी और श्रुतकीर्ति का विवाह भी भरत और शत्रुघ्न के साथ निश्चित कर दिया।

राक्षस और भी जल उठा। उसने रावण की बहुत प्रशंसा की, परंतु किसीने उसकी बात न सुनी। इसी समय सुबाहू और मारीच नाम के राक्षसों ने यज्ञ में विघ्न डालने के लिए वहां प्रवेश किया। राक्षस इनको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ; लेकिन उसकी वह प्रसन्नता देर तक न टिक सकी। राम ने उन दोनों को तुरंत पराजित कर दिया। सुबाहू वहीं मारा गया और मारीच भाग निकला।

: २ :

राक्षस से यह सब समाचार पाकर रावण का नाना माल्यवान बहुत दुःखी हुआ और वह इस बारे

में शूर्पणखा से सलाह करने लगा। यह मंत्रणा चल ही रही थी कि उन्हें महर्षि परशुराम का पत्र मिला। उन्होंने लिखा था, "विराध और कबंध आदि राक्षस दंडकवन में रहनेवाले ऋषियों को सताते हैं। उन्हें रोका जाय। ऐसा करोगे तो मैं तुम्हारा मित्र रहूंगा, नहीं तो तुम जानते ही हो।..." यह पत्र पाकर माल्यवान ने सोचा कि क्यों न परशुराम को राम के विरुद्ध भड़काया जाय? परशुराम शिव के बड़े भक्त हैं और राम ने शिव के धनुष को तोड़ा है।

उसने ऐसा ही किया। तबतक राम जनकपुरी पहुंच गये थे। समाचार पाकर परशुराम भी वहीं पहुंचे। उन्हें देखकर सब लोगों को बड़ी चिंता हुई, परंतु राम तनिक भी नहीं घबराए। वह शांत-मन परशुराम के पास पहुंचे। उन्हें देखकर परशुराम सहसा पुलकित हो उठे। राम की विनय ने उनका मन मोह लिया। लेकिन उन्होंने शिव का धनुष तोड़ा था और शिवद्रोही को वह कैसे क्षमा कर सकते थे? उन्होंने राम को युद्ध के लिए ललकारा। राजा जनक और ऋषि शतानंद ने उन्हें बहुत समझाया, परंतु उनका क्रोध कम न हुआ। इसी समय कंचुकी ने आकर सूचना दी, "कंकण खोलने की विधि के लिए देवियां

इकट्ठी होगई हैं। महाराज वर को भेजें।"

राम ने परशुराम की ओर मुड़कर पूछा, "आप-की आज्ञा हो तो जाऊं।" परशुराम बोले, "लोकाचार पूरे करलो, परंतु वनवासी गांव में देर तक नहीं ठहरते, जल्दी आना।" राम चले गए। जनक और शतानंद भी परशुराम को लेकर विश्वामित्र के पास पहुंचे। वहांपर महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र ने भी उन्हें बहुत समझाया। उनकी विद्या, तपस्या और कुल-परंपरा की बहुत प्रशंसा की। परशुराम इन बातों से बड़े प्रभावित हुए, लेकिन उन्होंने कहा, "राम ने शिव का धनुष तोड़ा है। मैं उनका वध किये बिना नहीं रह सकता। उन्होंने मेरे गुरु का अपमान किया है।"

विश्वामित्र बोले, "आप गुरु की इतनी चिंता करते हैं, लेकिन मेरा कुछ भी ध्यान नहीं करते! हम भी तो सब परस्पर संबंधी हैं!"

परशुराम दुविधा में तो पड़ गए, लेकिन वह राम को क्षमा करने की बात स्वीकार न कर सके। इसपर शतानंद को क्रोध आ गया और वह परशुराम की निंदा करने लगे। राजा जनक ने भी बहुत खरी-खोटी सुनाईं और युद्ध के लिए तैयार हो गये। अब तो परशुराम का पारा एकदम चढ़ गया और वह फरसा उठाकर

उन्हें मारने दौड़े। लेकिन महाराज दशरथ उनके बीच में आगए और उन्हें समझाने लगे। परशुराम हँस पड़े। बोले, "बहुत दिनों के बाद मुझे समझानेवाला मिला है। लेकिन मुझे समझानेवाले तो केवल शिव ही हैं। जो क्षत्रियों का संहार करनेवाला है, उसे क्षत्रिय कैसे समझा सकता है ?"

तभी राम फिर वहां आ गये। अब तो युद्ध अनिवार्य हो उठा। परशुराम राम को ललकारते हुए बोले, "राजकुमार, आओ परशुराम से युद्ध करो। उसको जीतो, लेकिन तुम उसे जीत न सकोगे। वह रेणुका का पुत्र तुम्हारा काल है। संसार में वन की तरह जिस धनुष का शब्द फैला हुआ है, वह मेरा भयानक धनुष अग्नि की तरह प्रलय उपस्थित कर देगा।"

लेकिन सबके देखते-देखते राम ने परशुराम को भी पराजित कर दिया।

: ३ :

पराजित होकर परशुराम तप करने के लिए चले गये। यह समाचार जब माल्यवान के पास पहुंचा तो उन्हें बड़ी चिंता हुई। वह सोचने लगे कि अब राम को किस प्रकार दबाया जाय। वह इसी प्रकार उन्नति करते रहे तो हमपर संकट आ सकता है।

एकाएक उन्हें एक युक्ति सूझी। उन्होंने शूर्पणखा से कहा, "राजा दशरथ ने भरत की माता रानी कैकेयी को एक बार दो वर देने का वचन दिया था। उसी कैकेयी की मंथरा नाम की एक दासी है। महाराज दशरथ का कुशल समाचार लेने के लिए वह अयोध्या से जनकपुर जा रही है। तुम उसके शरीर में प्रवेश कर जाओ।" इसके बाद उन्होंने शूर्पणखा के कान में कुछ कहा। उसे सुनकर शूर्पणखा बोली, "इससे क्या लाभ होगा ?"

माल्यवान ने कहा, "राम यदि इधर आये तो हम उन्हें बहुत कष्ट देंगे। राजनीति से उन्हें ठगना भी आसान होगा। रावण सीता से विवाह करना चाहता है। हम सीता को बड़ी आसानी से चुरा लायेंगे। ऐसा होने पर राम या तो मर जायंगे या संधि के लिए प्रार्थना करेंगे। यदि उन्होंने हमपर आक्रमण भी कर दिया तो हो सकता है, रावण का मित्र बालि उन्हें मार डाले ?"

शूर्पणखा ने पूछा, "यदि बालि राम को न मार सके तो क्या होगा ?"

माल्यवान ने कहा, "तब तो राक्षस-कुल का सर्व-नाश हो जायगा। केवल विभीषण बचेगा। वह राम

का भक्त है। धर्मात्मा राम उसीको राज दे देंगे।"

माल्यवान ने शूर्पणखा को यह भी बताया कि रावण के कुल में फूट पड़ी हुई है। खर-दूषण पैसे के लिए रावण का साथ दे रहे हैं। कुंभकर्ण का होना, न-होना बराबर है, क्योंकि वह सदा सोया रहता है ग्रौर उजड्ड भी है। यह सब बताते हुए वह बहुत दु:खी हो उठा। लेकिन उसे कोई ग्रौर उपाय न सूझा ग्रौर उसने शूर्पणखा को ग्रपना काम करने के लिए भेज दिया।

इधर परशुराम ने जाते समय राम को ग्रपना धनुष दिया था ग्रौर दंडक-वन के तपस्वियों की रक्षा करने का भार सौंपा था। वह वहां जाने की बात सोच ही रहे थे कि मंथरा के वेष में शूर्पणखा ने वहां प्रवेश किया। उन्हें देखते ही वह उनपर मोहित होगई। राम ने मझली माता कैकेयी का कुशल समाचार पूछा। मंथरा ने राजा दशरथ के नाम एक पत्र उन्हें दिया। उसमें राजा को दोनों वरों की याद दिलाई गई थी। लिखा था——एक वर से भरत राजा हों, दूसरे वर से राम, सीता ग्रौर लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष के लिए वन में जाकर रहें। यह पढ़कर लक्ष्मण बड़े क्रुद्ध हुए। लेकिन राम के समझाने पर वह वन जाने के लिए

तैयार हो गए।

इधर जब इस प्रकार बातें हो रही थीं तो उधर मामा को साथ लेकर भरत महाराज दशरथ के पास जा रहे थे। वहां पहुंचकर मामा युधाजित ने प्रजा की इच्छा के अनुसार राम को राजतिलक करने की सलाह दी। दशरथ तो पहले ही यह चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि राजतिलक के साथ-साथ परशुराम को जीतने का उत्सव भी मनाया जाय। तभी राम और लक्ष्मण उनके पास पहुंचे और उन्होंने माता कैकेयी की ओर से वे दो वर राजा से मांगे। उन वरों की बात जानकर महाराज दशरथ और जनक दोनों मूर्च्छित होगए। भरत तो इतने दुःखी हुए कि वह अपने मामा की निंदा करने लगे। उन बेचारों को इस कुचक्र का कुछ पता नहीं था। वह राम को वन जाने से रोकने लगे, परंतु राम अपनी बात पर अटल रहे और सीता के आ जाने पर वह वन की ओर चल पड़े। युधाजित और भरत भी उनके पीछे-पीछे चले। युधाजित ने कहा, "राम, देखो, तुम्हारे चरणों का सेवक भरत तुम्हारे पीछे आ रहा है।"

राम बोले, "इनको तो पिता ने प्रजा की रक्षा करने की आज्ञा दी है।"

भरत ने कहा, "यह काम लक्ष्मण या शत्रुघ्न कर लेंगे।"

राम बोले, "मैं या तुम या और कोई भी पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते।"

यह सुनकर भरत मूर्च्छित होकर गिर पड़े। जब उन्हें होश आया तो उन्होंने मामा से कहा, "आप राम से मेरे लिए खड़ाऊं मांग लें। जटा बढ़ाकर इस नंदी-ग्राम में, जबतक राम नहीं लौटेंगे, तबतक मैं इस पृथ्वी का पालन करता रहूंगा।"

राम ने खड़ाऊं भरत को दे दीं और फिर एक-दूसरे से गले मिलकर वे लोग अपने-अपने रास्तों पर चल पड़े।

राम, सीता और लक्ष्मण को वन जाते हुए देख-कर प्रजा बहुत दुखी हुई। सब लोग हाहाकार करने लगे और उनके पीछे दौड़ने लगे। राम ने मामा युधा-जित से उन्हें समझाने की प्रार्थना की। युधाजित ने प्रजा को सब प्रकार से समझाया और राम की प्रशंसा करते हुए कहा, "हर युग में लोग इस पवित्र कहानी को गायंगे और हर युग में राम के पावन चरित का प्रचार होगा।"

राम वहां से निषादराज गुह की राजधानी की

ओर चल पड़े। उनकी इच्छा थी कि पहले गुह को तंग करनेवाले राक्षसों को समाप्त किया जाय और फिर चित्रकूट पर्वत पर पहुंचा जाय। वहां से वह उस वन में जाना चाहते थे, जहां जटायु रहते थे।

: ४ :

जटायु और संपाति दोनों भाई-भाई थे। जटायु जन-स्थान में रहते थे और संपाति मलय पर्वत पर। उनकी महाराज दशरथ से बड़ी मित्रता थी और उनको उन सारी घटनाओं का पता लग गया था। वह यह भी सुन चुके थे कि महाराज दशरथ की मृत्यु हो चुकी है। इन्हीं दिनों एक बार जटायु अपने बड़े भाई से मिलने के लिए मलय पर्वत पर गये तो संपाति ने पूछा, "राम का पितृ-शोक कम हुआ या नहीं?"

जटायु बोले, "राम स्वभाव से बड़े गंभीर हैं। विद्या और तप में भी उनकी गति है। इसलिए अब उनका शोक कम होगया है। अगस्त्य मुनि के कहने से वह इस समय पंचवटी में रहते हैं। एक बार अपनी इच्छा पूरी करने के लिए शूर्पणखा उनके पास गई थी।"

यह सुनकर संपाति को बड़ा आश्चर्य हुआ। कहने लगा, "वह बहुत बेशर्म है। राम ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया?"

जटायु बोले, "लक्ष्मण ने उसकी नाक, कान और ओठ काट डाले। इसपर खर-दूषण ने राक्षसों की एक बड़ी सेना लेकर राम पर आक्रमण किया, लेकिन राम ने सबको मौत के घाट उतार दिया।"

संपाति ने कहा, "इसका मतलब तो यह है कि राम और रावण में भयंकर शत्रुता ठन गई है। भाई, तुम इन लोगों का ध्यान रखना। रावण बदला लेने के लिए जरूर आयगा।"

इसी प्रकार बहुत-सी बातें करके जटायु वापस लौट चले। आकाश में उड़ते हुए उन्होंने देखा कि राम एक मायावी मृग के पीछे भागे चले जा रहे हैं। एक ओर लक्ष्मण उनकी खोज करते फिर रहे हैं और दूसरी ओर उनकी कुटी में एक तपस्वी प्रवेश कर रहा है। वह तुरंत समझ गये कि यह दुरात्मा रावण है। दूसरे ही क्षण उन्होंने देखा कि रावण सीता को रथ में बैठा कर कहीं ले जा रहा है। जटायु भय से कांप उठे, लेकिन वह डरनेवाले नहीं थे। उन्होंने रावण को ललकारा और सीता की रक्षा के लिए सब प्रयत्न किये, लेकिन रावण ने उनके पर काटकर उनको बेकार कर दिया और सीता को लेकर भाग गया।

उधर जब राम और लक्ष्मण अपनी कुटी में लौटे

तो सीता वहां नहीं थीं। केवल घायल जटायु तड़प रहे थे। उन्होंने राम को सीता चुराने की सब कहानी सुनाई। इसके बाद वह स्वर्ग सिधार गए। राम यह सब कथा सुनकर बड़े दुखी हुए। उन्होंने जटायु का विधिवत् दाहकर्म किया और फिर सीता को खोजने के लिए आगे बढ़े। उनका मन बहुत ही दुखी था। रह-रहकर सीता की याद उनको सता रही थी। वह अपनेको बहुत ही कोस रहे थे कि उनके कारण ही पिता के परम मित्र जटायु का इस प्रकार अंत हुआ। लक्ष्मण उनको सांत्वना दे रहे थे और दोनों बराबर आगे बढ़ रहे थे।

मार्ग में उनको एक भयानक स्थान दिखाई पड़ा। उस वन में कबंध नामक राक्षस रहता था। इतने में ही उन्होंने सुना, कोई नारी करुण कंठ से पुकार रही है, "बचाओ, बचाओ, कबंध राक्षस मुझे लिये जा रहा है।"

यह सुनकर राम ने तुरंत लक्ष्मण को वहां जाने की आज्ञा दी। कुछ क्षण बाद लक्ष्मण एक शबरी को लेकर राम के पास लौट आये। इस शबरी ने राम को बताया कि रावण का भाई विभीषण अपने बंधुओं को छोड़कर ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव के पास आ

गया है। उसने आपके लिए यह पत्र दिया है। विभीषण ने उस पत्र में लिखा था :

"जिनका भाग्य बिगड़ गया है, वैसे लोगों के लिए दो ही शरण हैं : या तो वह धर्म का आचरण करे या आपकी शरण में आये। आप धर्म के रक्षक हैं।"

यह पत्र पढ़कर राम ने प्रतिज्ञा की कि वह विभीषण को अपना प्रिय मित्र मानेंगे और उसको लंका का राजा बनायंगे।

अब तो शबरी बहुत प्रसन्न हुई और उसने बताया कि जब रावण सीता को लिये जा रहा था तब उनका दुपट्टा गिर पड़ा था। उसपर 'अनसूया' नाम लिखा हुआ है और उसे सुग्रीव ने उठा लिया है। यह सुनकर राम का जी भर आया और वह सुग्रीव, विभीषण और हनुमान आदि से मिलने के लिए शबरी के साथ चल पड़े।

मार्ग में उन्हें एक दिव्य पुरुष मिला। उसने बताया, "मैं लक्ष्मी का पुत्र दनु हूं। एक शाप के कारण कबंध राक्षस होगया था। आपने मुझे मुक्त कर दिया है। मैं आपका उपकार मानता हूं और आपको यह सूचना देता हूं कि माल्यवान ने आपको मारने के लिए बालि को नियत किया है।"

यह कहकर वह दिव्य पुरुष चला गया और राम शबरी से बातें करते हुए पंपापुर की ओर बढ़ने लगे। कुछ दूर जाने पर उन्होंने बालि को देखा। उसने सोने के आभूषण पहने हुए थे। उसका लाल शरीर ऐसे शोभा दे रहा था, जैसे बिजली से महा मेघ शोभायमान होते हैं। अपने अंग सिकोड़कर जब वह उछलता था तो मेरु के पर्वत के समान मालूम होता था। दूत के द्वारा उसे राम और विभीषण की मित्रता का पता लग गया था। जब उसने राम को देखा तो वह बहुत प्रभावित हुआ। उसके हृदय में पवित्र भावना पैदा होने लगी; लेकिन वह युद्ध करने की प्रतिज्ञा कर चुका था, इसलिए उसने राम को युद्ध के लिए ललकारा। पर राम ने एक ही बाण में उसको बुरी तरह घायल कर दिया।

इसी समय विभीषण और सुग्रीव आदि सब वहां आ पहुंचे। सारी कथा जानकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ। सुग्रीव की आंखें भर आईं। बालि ने उसे ढाढ़स बंधाया और उसे तथा अंगद को राम के हाथों में सौंप दिया। यही नहीं, उसने उन दोनों में परस्पर मित्रता भी करवा दी। अंत में वह बोला, "मेरे प्राण निकल रहे हैं। मुझे झरने के किनारे ले चलो।"

यह सुनकर बानर चीत्कार करने लगे। बालि ने कहा, "बानरो, सुग्रीव और अंगद का प्रभुत्व आप पर निर्भर है। मेरे स्नेह के कारण इनकी मदद करते रहना। राम और रावण के युद्ध में मेरे स्नेह की परीक्षा होगी। आपके पराक्रम के बारे में कुछ कहनेवाला मैं कौन होता हूं।"

: ५ :

बालि की मृत्यु का समाचार पाकर माल्यवान बहुत दुखी हुआ। उसने समझ लिया कि भाग्य उनके विरुद्ध है। जब राम ने बालि-जैसे योद्धा को मार डाला तो और कोई भी काम उनके लिए कठिन नहीं है। सुना है, सीता की खोज करने के लिए उन्होंने अपने चतुर दूत चारों ओर भेज दिये हैं। इतने में ही एक भयंकर शब्द उन्हें सुनाई पड़ा। कोई आर्त स्वर में पुकार रहा था, "लंका जल रही है और वीर लोग छिप-छिपकर इधर-उधर भाग रहे हैं।" इस सूचना के साथ-ही-साथ त्रिजटा व्याकुल-मन रोती-पीटती वहां आई।

उसने बताया, "एक बानर ने सारी नगरी जला डाली है। उसने राक्षसों को खींच-खींचकर उस आग में जला दिया है। उसने अक्षयकुमार को भी मार डाला है। उसने सीता से भी भेंट की है।" यह सुनकर

माल्यवान समझ गया कि हो-न-हो, यह हनुमान ही है। जब एक बानर ऐसा काम कर सकता है तो सुग्रीव के पास तो ऐसे करोड़ों बानर हैं। लेकिन उसने त्रिजटा को ढाढ़स बंधाया। बोला, "रावण धर्मात्मा है; लेकिन दैव उसके प्रतिकूल जान पड़ता है।"

और वह त्रिजटा के साथ रावण के पास चला। उस समय रावण अपने महल की अटारी पर बैठा हुआ सीता को देख रहा था और मंदोदरी उसे समझा रही थी। उसने रावण को बताया कि राम ने समुद्र को पराजित कर लिया है और बानरों ने उसपर एक पुल बांध दिया है।

लेकिन रावण ने इन बातों पर विश्वास नहीं किया। वह हँसकर बोला, "महारानी, तुम्हें धोखा हुआ है। समुद्र पर पुल कौन बांध सकता है? सारे द्वीपों पर जितने पर्वत हैं, उन सबसे समुद्र का एक कोना भी नहीं भरेगा।"

लेकिन इसी समय चारों ओर कोलाहल मचने लगा। सेनापति प्रहस्त ने आकर सूचना दी कि लंका को चारों ओर से घेर लिया गया है।

रावण को अब भी विश्वास नहीं आया। लेकिन तभी रामदूत अंगद ने वहां प्रवेश किया। उसने कहा,

"राम की आज्ञा से मैं तुमसे निवेदन करने आया हूं कि सीता को छोड़ दो। सब भाइयों को लेकर राम-लक्ष्मण की शरण में चलो, नहीं तो वे तुम्हें मार डालेंगे।"

रावण क्रोध से भर उठा। उसने अंगद के अंग-भंग करने की आज्ञा दी। प्रहस्त ने उन्हें समझाया कि दूत पर क्रोध नहीं किया जा सकता, लेकिन रावण ने कुछ न सुना।

यह सब देखकर अंगद वहां से चला गया। उसके चले जाने के बाद रावण ने लंका के फाटक खोल देने की आज्ञा दी। भयंकर युद्ध शुरू हो गया।

उस युद्ध को देखने के लिए इंद्र और चित्ररथ आदि देवता और गंधर्व वहां आ पहुंचे। इंद्र ने अपना युद्ध-रथ राम के पास भेज दिया, क्योंकि रावण रथ पर बैठा हुआ था। देखते-देखते युद्ध की भयंकरता बढ़ गई। वीर लोग हताहत होने लगे। रण-भूमि उनसे भर उठी। रावण अपने पुत्रों और भाइयों से घिरा हुआ था। उसके बाईं ओर मेघनाद था और दाईं ओर कुंभकर्ण। दूसरे बंधु-बांधव उसके पीछे थे। लेकिन राम पर इन बातों का कोई प्रभाव न था। वह निडर होकर बड़ी तेजी से बाण चला रहे थे। सुग्रीव उनके आगे था, अंगद पीछे। उनके दायें-बायें जामवंत और

विभीषण थे। हनुमान लक्ष्मण के साथ थे और वे मेघनाद से युद्ध कर रहे थे। तभी रावण ने देखा कि उसके कई पुत्र मारे गए हैं। वह मेघनाद के पास पहुंचा, लेकिन शीघ्र ही उसे युद्ध के मैदान से भाग जाना पड़ा। उधर कुंभकर्ण राम के बाणों से घायल हो गया। यह देखकर उसके पुत्र कुंभ ने राम पर आक्रमण किया, परंतु सुग्रीव ने उसे तुरंत मार डाला और उसके बाद कुंभकर्ण की नाक काट डाली।

रावण फिर युद्ध-भूमि में आ पहुंचा। इसी समय लक्ष्मण ने मेघनाद पर एक अद्भुत अस्त्र फैंका। उसे मेघनाद ने काट डाला। लेकिन रावण ने जो अस्त्र लक्ष्मण पर फैंका उसे काटने का वह अवसर न पा सके और मूर्च्छित होकर गिर पड़े। यह समाचार सुनकर राम बहुत व्याकुल हुए। लेकिन वह उस समय कुंभकर्ण से युद्ध कर रहे थे। शीघ्र ही उसे मारकर वह लक्ष्मण को देखने गए। कुछ क्षण बाद हनुमान भी नाना प्रकार की औषधियोंवाले द्रोण पर्वत को लेकर वहां आगए। उसकी गंध से लक्ष्मण को होश आगया।

युद्ध अभी चल रहा था। राक्षसों में केवल रावण और मेघनाद बच रहे थे। सो राम रावण

से और लक्ष्मण मेघनाद से भयंकर युद्ध करने लगे। उनके सिंहनाद से आकाश गूंज उठा। अंत में राम और लक्ष्मण ने रावण और मेघनाद को मारने के लिए ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। बस क्षणभर में उनके सिर कटकर पृथ्वी पर लोटने लगे।

रावण को मरा हुआ देखकर चारों ओर आनंद छा गया। आकाश से फूल बरसने लगे।

: ६ :

रावण की मृत्यु के बाद लंकापुरी की देवी लंका अपने स्वामी के लिए बहुत बुरी तरह से विलाप करने लगी। उसका शोक इसलिए और भी बढ़ गया था कि रावण के कुल में उसे कोई भी जीवित नहीं दिखाई दे रहा था। इसी समय अलका देवी वहां आईं। वह उसकी बड़ी बहन थीं। उन्होंने उसे बहुत धीरज बंधाया। लेकिन वह धीरज कैसे रख सकती थी। कहने लगी, "केवल स्त्रियां ही तो बच रही हैं। कहने को विभीषण भी बचा हुआ है, लेकिन वह शत्रु के साथ मिला हुआ है।"

अलका बोली, "बहन, ऐसा न कहो। वह रावण के शत्रु थे, हमारे नहीं। फिर त्रिलोकी के भला करने-वाले राम हमारा भी भला करनेवाले हैं।"

लंका बोली, "अगर ऐसा है तो उन्होंने रावण को क्यों मारा ?"

अलका ने कहा, "रावण सीता को चुरा लाया था इसलिए।"

और फिर उन्होंने बताया कि रावण के सौतेले भाई कुबेर के कहने पर वह राक्षसों को समझाने के लिए आई है। विभीषण का राज्याभिषेक भी वह देखेगी और पुष्पक विमान को राम को सौंप देगी।

कुबेर भी राम-भक्त हैं, यह जानकर लंका को बड़ा आश्चर्य हुआ। इसी समय उन्होंने सुना, कोई कह रहा था, "तीनों लोकों के रहनेवालो, सावधान! सब देवता लोग सती सीता का अभिनंदन कर रहे हैं। आग में बैठकर उन्होंने अपने सतीत्व का परिचय दे दिया है। हे रघुनंदन! संसार की मर्यादा की रक्षा करनेवाली सीता का अब आदर करो।"

राम ने सीता को स्वीकार कर लिया और उसके बाद विभीषण का राज्याभिषेक भी कर दिया। यह सब समाचार सुनकर अलका और लंका राम के दर्शन करने के लिए चल पड़ीं। जब वे वहां पहुंचीं तो विभीषण राम से निवेदन कर रहा था, "आपकी आज्ञानुसार मैंने सब बंदियों को मुक्त कर दिया है। सदा इच्छा

के अनुसार चलनेवाला यह पुष्पक विमान मैं आपको सौंपता हूं। इसे स्वीकार कीजिए।"

पुष्पक विमान को देखकर राम बड़े प्रसन्न हुए। तभी सुग्रीव ने उन्हें बताया कि जब हनुमान द्रोण-पर्वत को लेकर आ रहे थे तब वह भरत से मिले थे। हनुमान ने उन्हें तबतक के सब समाचार बता दिये थे। आगे के समाचार न जानकर इस समय वह बहुत दुखी हो रहे होंगे, इसलिए हमें हनुमान को शीघ्र ही भरत के पास भेजना चाहिए।

हनुमान को भरत के पास भेजकर राम भी सीता और लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण आदि सबको लेकर विमान पर सवार होगए। चौदह वर्ष समाप्त होने में अब एक ही दिन बचा था। ये लोग अयोध्या की ओर चल पड़े। राम मार्ग में सीता को वे सब स्थान दिखाते आ रहे थे, जहां-जहां प्रवास-काल में वे रह चुके थे। समुद्र का पुल, दंडक वन, विंध्याचल और ऋषियों के अनेक आश्रम उन्होंने देखे। राम ने सीता को वह सारी कथा सुनाई, जो रावण के सीता को हर ले जाने के बाद उनके साथ घटी थी। उस कथा को सुनकर सीता को बार-बार रोमांच हो आता था। जिस समय वे दंडक वन में पहुंचे तो राक्षसों के युद्ध की कहानी

सुनकर सीता फिर गंभीर हो उठीं। राम ने उन्हें सांत्वना दी और आगे बढ़ गये। उसी समय आकाश-मार्ग में उन्होंने किन्नरों की जोड़ी को देखा। वे कुबेर का संदेश लेकर आये थे।

उन्होंने कहा, "जबतक शेषनाग पर यह पृथ्वी है और जबतक तारे आकाश में हैं तबतक आपका निर्मल यश लोग गाया करेंगे।"

ये सब बातें करते हुए वे लोग विश्वामित्र के आश्रम में पहुंच गए। यहां आकर राम ने विमान से उतरना चाहा, परंतु विश्वामित्र मन-ही-मन इस बात को समझ गये और उन्होंने आज्ञा दी, "सीधे चले जाओ। वशिष्ठ आदि तुम्हारी राह देख रहे हैं। मैं भी दो घंटे में वहीं आता हूं।" विमान फिर चलने लगा। उधर हनुमान से राम के आने की सूचना पाकर भरत सेनासहित उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़े। जिस समय विमान अयोध्या में उतरा, ऐसा लगता था मानो चारों ओर से आनंद का समुद्र उमड़ आया हो।

चिरकाल से बिछड़े भाई ललककर एक दूसरे से मिले। उनका मिलना देखकर सब पुलकित हो उठे। राम ने चरणों में पड़े हुए भरत को अंक में भर लिया।

लक्ष्मण ने भरत के चरण छुए और फिर उनके गले से चिपक गये। शत्रुघ्न दोनों भाइयों के चरणों में प्रणाम करने लगे। फिर सब लोग सीता से मिले। राम ने अपने मित्रों का सबसे परिचय कराया। भरत ने निवेदन किया, "राजतिलक की तैयारी हो चुकी है। महाराज वशिष्ठ आपकी राह देख रहे हैं। चलिए।"

सब लोग राजमहलों की ओर चल पड़े। वहां वशिष्ठसहित अरुंधती, कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी बड़ी उत्सुकता से उनकी राह देख रही थीं। उन सबके वहां पहुंचते ही एक बार फिर प्रेम का समुद्र उमड़ पड़ा। कैकेयी का मन शंकाओं से भरा हुआ था, लेकिन अरुंधती ने उसी समय उन्हें वह रहस्य बताया, जिसके अनुसार माल्यवान के कहने पर शूर्पणखा ने मंथरा का रूप धारण किया था। यह सुनकर सब स्त्रियां चकित हो उठीं और उनका हर्ष दुगुना हो गया।

विश्वामित्र भी वहां आ पहुंचे और सब लोगों ने बड़े उत्साह के साथ राम का राज-तिलक किया। आकाश में दुंदुभी बजने लगी, मंगल-गान होने लगा, फूल बरसने लगे। वशिष्ठ और विश्वामित्र ने आशीर्वाद दिया, "हे गुणों के समूह रामचंद्र, अपने भाइयों के साथ तुम उस राज्य-भार को उठाओ, जिसको चिर-

काल से इक्ष्वाकु-वंश के राजा उठाते आये हैं।"

विश्वामित्र बोले, "बेटा राम, अब तुम सुग्रीव और विभीषण को विदा कर दो। इस पुष्पक विमान को भी कुबेर को लौटा दो। आवश्यकता होने पर फिर मंगा लेंगे।"

राम ने उनकी आज्ञा का पालन किया।

विश्वामित्र फिर बोले, "बेटा राम, तुमने अपने पिता के आदेश का पालन किया, धर्म की रक्षा की, राक्षसों का नाश करके त्रिलोकी को अभय प्रदान किया, देवताओं के मनोरथ पूरे किये, प्रवास से लौटकर राज्य पाया। अब और क्या अच्छा है ?"

राम बोले, "इससे अधिक मैं और क्या चाह सकता हूं। लेकिन यदि आप प्रसन्न हैं तो, राजा लोग आलस्य को छोड़कर प्रजा की रक्षा करें, मेघ समय पर बरसें, राष्ट्र में ख़ूब अन्न पैदा हो, कवि लोग प्रसाद-गुण से युक्त कविता में रुचि लें और विद्वान लोग दूसरों की रचनाओं को पढ़कर आनंद प्राप्त करें।"

विश्वामित्र बोले, "ऐसा ही हो।"

'मंडल' की कुछ प्रमुख पुस्तकें

आत्मकथा (अजिल्द) (गांधीजी) २॥)
आत्मकथा संक्षिप्त ,, १)
प्रार्थना-प्रवचन (दो भाग),, ५॥)
गीता-माता ,, ४)
पंद्रह अगस्त के बाद ,, १॥), २)
दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह ३॥)
आत्म-संयम ,, ३)
गीता-बोध ,, ॥)
अनासक्तियोग ,, ।॥)
ग्राम-सेवा ,, ।=)
मंगल-प्रभात ,, ।=)
सर्वोदय ,, ।=)
नीति-धर्म ,, ।=)
आश्रमवासियों से ,, ।=)
हमारी मांग ,, १)
सत्यवीर की कथा ,, ।)
हिंद-स्वराज्य ,, ।॥)
अनीति की राह पर ,, १)
बापू की सीख ,, ॥)
गांधी-शिक्षा (तीन भाग) ।॥≡)
आज का विचार (दो भाग) ।॥)
ब्रह्मचर्य (दो भाग) ,, १।॥)
गांधीजी ने कहा था (पांच भाग) १।)
शांति-यात्रा (विनोबा) १॥)
विनोबा के विचार (दो भाग) ३)
गीता-प्रवचन ,, १।)
जीवन और शिक्षण ,, २)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन ,, १)
ईशावास्यवृत्ति ,, ।॥)
ईशावास्योपनिषद् ,, =)
सर्वोदय-विचार ,, १=)
स्वराज्य-शास्त्र ,, ॥)
गांधीजी को श्रद्धांजलि ,, ।=)
भूदान-यज्ञ (विनोबा) ।)

राजघाट की संनिधि में ,, ॥=)
विचार-पोथी ,, १)
सर्वोदय का घोषणा-पत्र ,, ।)
उपनिषदों का अध्ययन ,, १)
मेरी कहानी (नेहरू) ८)
मेरी कहानी (संक्षिप्त) ,, २॥)
हिंदुस्तान की समस्याएं ,, २)
राष्ट्रपिता ,, २)
राजनीति से दूर ,, २)
विश्व-इतिहास की झलक (संक्षिप्त) ६)
हिंदुस्तान की कहानी (संक्षिप्त) २॥)
नया भारत ।)
आजादी के आठ साल ।)
आत्मकथा (राजेंद्रप्रसाद) ८)
गांधीजी की देन ,, १॥)
गांधी-मार्ग ,, =)
महाभारत-कथा (राजाजी) ५)
कुब्जा-सुंदरी ,, २)
शिशु-पालन ,, ॥)
मैं भूल नहीं सकता (काटजू) २॥)
कारावास-कहानी (सु. नैयर) १०)
गांधी की कहानी (लुई फिशर) ४)
भारत-विभाजन की कहानी ४)
इंग्लैंड में गांधीजी २)
बा, बापू और भाई ॥)
गांधी-विचार-दोहन १॥)
सत्याग्रह-मीमांसा ३॥)
बुद्ध-वाणी (वियोगी हरि) १)
अयोध्याकांड ,, १)
भागवत-धर्म (हरिभाऊ) ५॥)
श्रेयार्थी जमनालालजी ,, ६॥)
स्वतंत्रता की ओर ,, ४)
बापू के आश्रम में ,, १)

संस्कृत-साहित्य-सौरभ की पुस्तकें

१. कादंबरी
२. उत्तर-रामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुंतला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानंद
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्षचरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालती-माधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमार-संभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावण-वध
२८. सौंदरनंद
२९. कुंदमाला
३०. यशस्तिलक
३१. तिलकमंजरी
३२. प्रतिमानाटक

सैंतीस नये पैसे